an>

Title: Need to increase the amount of honorarium of 'Shiksha Preraks'.

श्री सुमेधानन्द सरस्वती (सीकर): अध्यक्ष महोदया, मुझे बोलने का समय देने के लिए धन्यवाद।

मैं शिक्षा के प्रति समर्पित कुछ कार्यकर्ता, जिन्हें 'शिक्षा प्रेरक' के रूप में जाना जाता है, उनके संदर्भ में और उनकी कुछ समस्याओं की ओर आपके माध्यम से सदन और सरकार का ध्यान आकर्Â िषत करना चाहता हूं।

महोदया, आज 'अगस्त क्रांति दिवस' है और क्रांतिकारियों की प्रेरणा के स्रोत श्री राम प्रसाद बिस्मिल एक बात कहा करते थे कि "शिक्षित व्यक्ति का शोÂषण नहीं होता और संस्कारित व्यक्ति का पतन नहीं होता।" आज यदि आदिवासी पिछड़े हैं, तो उसका मूल कारण उनमें शिक्षा का अभाव होना है। राजस्थान में बांसवाड़ा के गोविन्द गुरू ने आदिवासियों को शिक्षित करने का बहुत बड़ा काम किया है। लेकिन वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में जो शिक्षा-प्रेरक लगे हुए हैं, अभी उनकी एक बैठक में मुझे जाने का मौका मिला था। उन्होंने अपनी समस्याओं को मेरे सामने रखा था। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि उन्हें महीने में केवल रु.2,000/- दिए जाते हैं। मेरा भारत सरकार और राजस्थान सरकार से भी आग्रह है कि आजकल रु.2000/- में कुछ नहीं होता। राजस्थान में 'नरेगा' के एक कर्मचारी को 170 रुपए प्रति दिन दिए जाते हैं, जो प्रति माह रु.5,200/- होते हैं। इन शिक्षा प्रेरकों को केवल 2 हजार रुपए महीने दिए जाते हैं। यह उनके साथ बड़ा अन्याय है। अतः मैं भारत सरकार और राजस्थान सरकार से निवेदन करना चाहूंगा कि उन्हें अच्छा मानदेय दिया जाए, ताकि वे लोगों को सम्मान पूर्वक शिक्षित करके देश की सेवा कर सकें। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष: सर्वश्री चन्द्र प्रकाश जोशी, सुधीर गुप्ता, रोड़मल नागर, गजेन्द्र सिंह शेखावत, रामचरण बोहरा, शरद त्रिपाठी, कुंवर पुÂष्पेन्द्र सिंह चन्देल और श्री भैरोंप्रसाद मिश्र, को श्री सुमेधानन्द सरस्वती द्वारा उठाए गए विÂषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।